UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 28 आचार्य विनोबा भावे (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

विनोबा जी का जन्म 11 सितम्बर, 1895 ई० को महाराष्ट्र में कोलाबा जिले के गागोदा ग्राम में हुआ। विनोबा जी पाठ्यपुस्तकों के साथ आध्यात्मिक पुस्तकों के पढ़ने में भी रुचि लेते थे। छोटी उम्र में ही उन्होंने तुकाराम गाथा, दासबोध ब्रह्मसूत्र, शंकर भाष्य और गीता का अनेक बारे अध्ययन किया।

विनोबा जी कक्षा-5 से लेकर ऊँची कक्षाओं के बच्चों को पढ़ाते थे वे उच्चकोटि के रचनाकार भी थे। उन्होंने मराठी, हिन्दी, तमिल, संस्कृत और बंगला में अनेक पुस्तकों की रचना की।

महात्मा गांधी के आग्रह पर वे साबरमती आश्रम चले आए। यहाँ वे उपनिषदों का नियमित वाचन और संस्कृत पढ़ाने का कार्य करने लगे। लोगों ने उन्हें आचार्य कहना प्रारम्भ कर दिया। इनमें आलस्य बिलकुल न था। वे दृढ संकल्पी और सच्चे कर्मयागी थे। विनोबा जी पर गीता का गहरा प्रभाव था। उन्होंने जगह-जगह घूमकर लोगों के सामाजिक उत्थान के विषय में विचार व्यक्त किए।

भूदान यज्ञ-विनोबा जी ज्यादा जमीन वाले किसानों की भूमि का कुछ हिस्सा भूमिहीनों में बाँटते थे। इस प्रकार भूदान यज्ञ के द्वारा विनोबा जी ने भूमिहीनों को जमीन दिलाई।

सर्वोदय सिद्धांत-विनोबा जी के सर्वोदय सिद्धांत के तीन तत्व हैं- सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह (त्याग)। उनके अनुसार आध्यात्मिक विकास का आधार सत्य है। सामाजिक विकास का आधार अहिंसा और आर्थिक विकास का आधार अपरिग्रह है।

विनोबा जी के विचार-"समता का अर्थ ऐसी बराबरी है जिसमें योग्यता के आधार पर आकलन हो।" भक्ति ढोंग नहीं है। दिनभर झूठ बोलकर, पाप करके प्रार्थना नहीं होती। जिस घर में उद्योग की शिक्षा नहीं है, उस घर के बच्चे घर का नाश कर देंगे। स्वावलम्बन का अर्थ है- अपने आप पर निर्भर होना तथा दूसरों का मुंह न ताकना। आशय है – "जितना कमाओ, उतना खाओ।"

विनोबा जी ऋषि, गुरु और क्रान्तिदूत सभी कुछ थे। 15 नवम्बर, 1982 ई० को उनका निधन हो गया। वर्ष 1983 ई० में इन्हें भारत सरकार द्वारा मरणोपरान्त 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

https://www.evidyarthi.in/